2017

HINDI

[Honours]

PAPER – VI

Full Marks : 90

Time : 4 hours

The figures in the right hand margin indicate marks

Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable

Illustrate the answers wherever necessary

[OLD SYLLABUS]

खण्ड — क

1. निम्नलिखित में से किन्हीं *दो* प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 15 x 2

(क) 'चन्द्रगुप्त नाटक की कथावस्तु में इतिहास और कल्पना का मर्मस्पर्शी एवं प्रभावशाली चित्रण हुआ है।' — कथन की सारगर्भित समीक्षा कीजिए।

(ख) 'लहरों के राजहंस' नाटक का शिल्पविधान पूर्णतः आधुनिक है' — इस कथन के आलोक में मोहन राकेश के नाटक के शिल्प पक्ष पर विचार कीजिए ।

(ग) हिन्दी में ललित निबंधकार के रूप में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के योगदान का मूल्यांकन कीजिए ।

(घ) 'कविता क्या है' निबन्ध की समीक्षा कीजिए ।

(ङ) 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' — में व्यक्त लेखक के विचारों का विवेचन कीजिए ।

खण्ड — ख

2. निम्नलिखित में से किन्हीं *पाँच* पर टिप्पणी लिखिए : 4 × 5

(क) चन्द्रगुप्त का चरित्र-चित्रण

(ख) 'बहुत बड़ा सवाल' नाटक की भाषा

(ग) 'श्रद्धा-भक्ति' निबन्ध का उद्देश्य

(घ) नाटककार जयशंकर प्रसाद

(ङ) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की निबन्ध शैली

(च) निबन्धकार विद्यानिवास मिश्र

(छ) 'मनुष्य की सर्वोत्तम कृति साहित्य' का प्रतिपाद्य

(ज) 'अंधेर नगरी' नाटक के शीर्षक की सार्थकता ।

खण्ड—ग

3. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं *पाँच* की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 8 × 5

(क) प्राय: मनुष्य, दूसरों को अपने मार्ग पर चलाने के लिए रुक जाता है, और अपना चलना बंद कर देता है ।

(ख) मनुष्य में घृणा है, जो अनायास-बिना सिखाये आ जाती है, वह पशुत्व का द्योतक है और अपने को संयत रखना, दूसरे के मनोभावों का आदर करना मनुष्य का स्वधर्म है ।

(ग) उसकी खोज है, पार्थिवता के अन्दर से अपार्थिव को पाने की । इसलिए वह संशयग्रस्त है, एक प्रश्नचिह्न है ।

(घ) जिसे अपनी वास्तविक क्षुद्रता का परिज्ञान अरूचिकर होगा, वह सापेक्षिकता के भय से ऐसे महत्वादर्श का सामीप्य कभी न चाहेगा, दूर-दूर भागा फिरेगा ।

(ङ) कोई व्यक्ति या वर्ग या जाति रूपये कमा सकती है, नाम कमा सकती है, बुद्धि से निम्न कोटि का स्वार्थ-साधन करके यश भी कमा सकती है, पर यह इस बात का प्रमाण नहीं है कि उसके भीतर मानवोचित्त सद्वृत्तियों का विकास हुआ है और न इसी बात का प्रमाण है कि वह जाति संसार की प्रगति में अपना कोई स्थायी दान छोड़ जाती है ।

(च) टके के वास्ते ब्राह्मण से धोबी हो जायँ और धोबी को ब्राह्मण कर दें, टके के वास्ते जैसी कहो वैसी व्यवस्था दें। टके के वास्ते झूठ को सच करें। टके के वास्ते ब्राह्मण से मुसलमान, टके के वास्ते हिन्दू से क्रिस्तान। टके के वास्ते धर्म और प्रतिष्ठा दोनों बेचे।

(छ) सभी चित्रकारों के पास काले, नीले, लाल आदि रंग रहते हैं; केवल उत्तम शिल्पी ही जानता है कि किसका किस स्थान पर उपयोग करने से चित्र सुन्दर लगेगा। यह संसार भी एक महत्वपूर्ण विशाल कला-कृति है। इसको इस ढंग से सजाना की उसकी कुरुपता और भद्दापन मिट जाए, प्रत्येक प्रकार के उपादान उचित मात्रा में उचित स्थान पर ठीक से बैठा दिये जायें-यही सबसे बड़ी कला है।